

बाल वाकिका



अपनाने योग्य बातें

□ राजेश कुमार (लखनऊ, उ.प्र.)

हमारे मन के अनुसार जब कोई बात नहीं होती, या बार-बार कहने पर भी जब कोई हमारी बात नहीं मानता तो हमें क्रोध आता है। क्रोध के साथ लोभ और स्वार्थ भी जुड़े होते हैं। हमारा मन अनुकूल बातें होने पर तो खुशी महसूस करता है लेकिन जरा सी भी कोई बात हमारे प्रतिकूल हुई नहीं कि हमें क्रोध आ जाता है। क्रोध की जगह हमें नम्रता अपनाना चाहिए। कई लोग ऐसे होते हैं जो दूसरों की निन्दा करने में खुशी महसूस करते हैं। निन्दा करने वाले की अपेक्षा स्तुति करने वाले को प्रसन्नता का अनुभव होता है। इसी तरह से हमें नफरत किसी से भी नहीं करनी चाहिए। हमें हमेशा सबसे प्यार ही करना है। दुर्गुण कोई भी नहीं अपनाना हमेशा सद्गुणों से अपना दामन भरना है। अपमान किसी का नहीं करना है सबका सत्कार, सबका सम्मान ही करना है। यह सारे गुण हमें सत्संग से प्राप्त होते हैं इसलिए हमें सत्संग में अवश्य जाना चाहिए और मनमत त्याग कर गुरमत अपनाना चाहिए।

हम अक्सर क्रोध-लोभ, निन्दा-नफरत, दुर्गुण-दुर्व्यवहार आदि में फँसकर लोगों का अपमान करते हैं और लोगों से अनावश्यक शत्रुता कर बैठते हैं। आइए, ठंडे दिमाग से सोचें और अपने जीवन में निम्नलिखित प्रयोग करके देखें, निश्चित है

इन बातों को अपनाने से हमें बहुत लाभ प्राप्त होगा -

- | | |
|--------------------|--------------|
| क्रोध की जगह | - नम्रता |
| दुर्व्यवहार की जगह | - सद्ब्यवहार |
| निन्दा की जगह | - स्तुति |
| नफरत की जगह | - प्यार |
| मनमत की जगह | - गुरमत |
| लोभ की जगह | - त्याग |
| दुर्गुण की जगह | - सद्गुण |
| शत्रुता की जगह | - मित्रता |
| अपमान की जगह | - सम्मान |

□ नरिन्दर कुमार मस्त (कनेक्टिकट, अमेरिका)

सारे जहाँ से है तू न्यारा।
सत्तुर प्यारा सत्तुर प्यारा।

भक्त की राहों का उजियारा। तू सबकी पत राखनहारा।
सारे जग का पालनहारा, सत्तुर प्यारा, सत्तुर प्यारा...

दाता तू है बख्शनहारा। हो जायेगा पार उतारा।
जो माने इक तेरा इशारा, सत्तुर प्यारा...

तेरी पूजा हम कर पायें। तेरी रज़ा में हम रह पायें।
बदला आपने जीवन हमारा, सत्तुर प्यारा...

तू है प्रेम का एक मसीहा। तू है इबादत का इक ज़रिया।
लाख लाख तुझे नमन हमारा, सत्तुर प्यारा...

